ट्रेनिंग

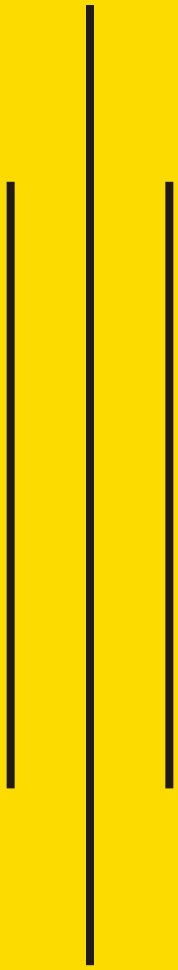

19–06–1995 से 24–06–1995

महाबीर सत्संग सभा

साडा है सजन राम – राम है कुल जहान
शब्द है गुरु – शरीर नहीं है

भूमिका

ट्रेनिंग अर्थात् प्रशिक्षण जिसका अर्थ है किसी पेशे या कला कौशल के सम्बन्ध में दी जाने वाली क्रियात्मक शिक्षा ।

सत्संग भी एक ज्ञान का स्त्रोत होता है । इसलिए सत्संग के संस्थापक व संचालन करने वाले संचालकों को चाहिए होता है कि जिस भी विषय ज्ञान की प्राप्ति श्रोतागणों या श्रद्धालुओं को कराना चाहते हैं, उस विषय के बारे में संचालकों के पास स्पष्टता और ज्ञान की सम्पूर्णता हो ताकि संस्था का संचालन सुचारू रूप से चले और सत्संग में आने वाले सजनों को उस विषय ज्ञान की ठीक प्रकार से उपलब्धि हो ताकि व्यवहार के समय वह उस ज्ञान का युक्ति संगत प्रयोग कर सकें । यह इसलिए आवश्यक है ताकि सत्संग में आने वाले सजनों का अमूल्य समय व्यर्थ न जाए और वह अपना जीवन उन्नति के योग्य बना सकें ।

क्योंकि सत्संग ऐसा समाज है जिसमें सत्य का संग व धर्म की चर्चा होती है । धर्म चर्चा सत्संगियों के स्वभावों में मूल गुण – वृत्ति भरने के लिये होती है ताकि सजन सजनता अपना, अपने जीवन के सब कर्त्तव्य परिपूर्णता से निभा पायें । यह सत्संग ही है जहाँ सजन आत्मिक ज्ञान अर्थात् आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला ज्ञान, ब्रह्मज्ञान अर्थात् पारमार्थिक सत्ता का ज्ञान और सांसारिक अर्थात् लौकिक ज्ञान समझने हेतु आते हैं ।

सत्संग के उद्देश्य को समझते हुए हर सत्संग के संचालक का जागरुक और निपुण होना आवश्यक है । इसे ध्यान में रखते हुए ही इस ट्रेनिंग का आयोजन

किया गया है ताकि उपरिलिखित हर विषय का ज्ञान और सत्संग संचालन की युक्तियों, नीतिओं और रीतिओं की सजनों को समझ हो और इस प्रकार वह प्रशिक्षण के पश्चात् सक्षम, समर्थ, सफल व सुयोग्य मार्गदर्शक बनें।

इसलिए हर आमन्त्रित सजन को चाहिए कि वह इस प्रशिक्षण के दौरान हर प्रकार से दक्षता ग्रहण करने की पूरी चेष्टा करे ताकि इस प्रशिक्षण के उपरान्त वह अपने – अपने शहरों में जा कर ठीक प्रकार से सत्संग का संचालन करता हुआ सतवस्तु के कुदरती शास्त्र में वर्णित सत्यज्ञान को सत्यता से सजनों को समझा सके, उन से अपनवा सके ताकि कलुकाल के स्वभावों में फँस भटकते हुए, दु:ख से त्राहित सजनों को जीवन के सत्य मार्ग का बोध हो और इस प्रकार हर सजन के मन मस्तिष्क में, उसके परिवारों में और भक्ति भाव में विचरते हुए सुख और शान्ति का वातावरण बने ।

इस पुस्तक में जो जो भक्ति – भाव के अभ्यास इस प्रशिक्षण सप्ताह में सजनों को कराए गए, उस दौरान इन अभ्यासों के प्रभाव से उत्पन्न मनोस्थिति अर्थात् किसी सजन का यकदम प्रकाश में चले जाना, हँसने लग जाना, किसी सजन का नाचने लग जाना, किसी सजन का दर्शन अवस्था में होना और किसी सजन का बेकाबू हो जाना, देखते हुए इस पुस्तक पढ़ने वाले हर सजन को सुझाव है कि अभ्यास करने से पहले उसको भली भान्ति समझ ले ।

※ ※ ※

विषय – सूची

क्रम संख्या	विषय	दिनांक	पृष्ठ संख्या
1	ट्रेनिंग पूर्व समझौता	17.6.95	1
2	श्री साजन वंदना	18.6.95	8
3	ट्रेनिंग किस को चाहिए	18.6.95	13
4	मिल्ट्री की चाल	18.6.95	16
5	सजन भाव	18.6.95	24
6	हँसते रहो	18.6.95	30
7.	कीर्तन के दौरान बातचीत	18.6.95	33
8	आत्मा – परमात्मा संवाद	18.6.95	35
9	स्वार्थी परमार्थी पढ़ाई क्या है ?	18.6.95	39
10	सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से अंत्याक्षरी	18.6.95	43
11	अक्षर	19.6.95	46
12	अक्षर चलाने के लिए प्रोत्साहन	19.6.95	61
13	ध्यान की स्थिरता अपनाओ	19.6.95	63
14	अक्षर का अभ्यास घड़ी की टक – टक के साथ	20.6.95	69
15	नमस्कार करने की युक्ति	20.6.95	71
16	सत्संग का उद्देश्य	20.6.95	77
17	धर्म का झंडा ऊँचा रखो	20.6.95	84
18	प्रभात का पाठ अफुर अवस्था में करने की युक्ति	21.6.95	90

क्रम संख्या	विषय	दिनांक	पृष्ठ संख्या
19	मानव जीवन का लक्ष्य	21.6.95	93
20	नामी सजनों का समझौता	21.6.95	105
21	एक पुरुष 'सबाहीनार'	21.6.95	111
22	भक्ति भाव की पढ़ाई	21.6.95	113
23	स्वतन्त्र भक्ति भाव	22.6.95	118
24	गुढ़ाई	22.6.95	125
25	नीतियाँ ठीक निभाओ	22.6.95	133
26	गीता का सार	23.6.95	138
27	निष्कामियों का भक्ति भाव	23.6.95	147
28	आत्म – पद की प्राप्ति	23.6.95	155
29	सतवस्तु (प्रश्नोत्तरी)	23.6.95	158
30	अमृत वर्षा	23.6.95	173
31	आओ बढ़ें सतयुग की ओर	24.6.95	182
32	जीवन लक्ष्य के प्रति यादगीरि	24.6.95	191
33	सत्संग का आरम्भ कैसे हुआ	24.6.95	195
34	ज्योति प्रकाश ईश्वर अन्दर ही है उसे देखो	24.6.95	208
35	हम प्रकाशित हैं हम प्रकाशित हैं	24.6.95	217
36	झूलना	24.6.95	219
37	कुदरती ग्रन्थ का अध्याय		220
38	आरती		226

Request for this book

Email
info@satyugdarshantrust.org